चतुर्थ अध्याय

'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बजार में' की मनोवैज्ञानिकता

चतुर्थ अध्याय

"हानूश" और "कबिरा खड़ा बजार में" की मनोवैज्ञानिकता

मनोविज्ञान - अर्थ : -

मनोविज्ञान शब्द का अंग्रेजी पर्यायी शब्द है - 'Psychology'। यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - Physche + Logos । "Psyche का अर्थ 'आत्मा' से होता था और का अर्थ 'विज्ञान' से। इस प्रकार Psychology का शाब्दिक अर्थ 'आत्मा का विज्ञान' है।"[1] इस प्रकार मनोविज्ञान को आत्मा का अध्ययन समझा जाता था।

मनोविज्ञान - शास्त्र का उदय :-

"मनोविज्ञान - शास्त्र भारत के लिए नया विषय नहीं है। हमारे पूर्वजों ने इस विषय पर पहले से ही विचार किया है, वे मानसशास्त्र को 'जीवन का तत्वज्ञान' कहते थे। इस तत्वज्ञान में मन सम्बन्धी अर्थात् चेतन-मन और अति-चेतन (Super conscious) मन का अध्ययन किया है। भगवत गीता में 'आत्मा', 'परमात्मा', 'ब्रह्म', 'आत्मजनन' आदि सम्बोधन दिये हैं। शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद आदि महार्षियोंने 'आत्मा', 'परब्रह्म' आदि का सम्बन्ध मन यानी आत्मा से ही लगाया है। इसलिए प्राचीनकाल से ही मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र या तत्वज्ञान कहा है।"[2] इस प्रकार मनोविज्ञान शास्त्र का उदय बहुत पहले हुआ है दीखता है।

मनोविज्ञान की परिभाषा :-

"मनोविज्ञान मन सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान का प्रस्तोता है। मन अदृश्य, अस्पष्ट, अस्पृश्य, विवादास्पद और अनुमानित है। मन:स्थिति का विश्लेषक व्याख्याता मनुष्य का व्यवहार है। अत: मनोविज्ञान मनुष्य जीव के व्यवहार का विश्लेषक है।"[3]

"मनोविज्ञान बाहरी भीतरी दबावों एवं प्रभावों के अधीन व्यक्ति के मन के ज्ञान-अज्ञात पक्षों, अनुभूतियों, क्रिया-प्रतिक्रियाओं, प्रभावों इत्यादि का विश्लेषक शास्त्र है।"[4]

"मनोविज्ञान वह शुद्ध विज्ञान है, जो मानव तथा पशु के उस क्रिया-कलाप का अध्ययन करता है, जो उसके मन:संसार में घटित होता है।"[5] - जेम्स ड्रेवर

"मनोविज्ञान जीवन की विविध परिस्थितियों के प्रति प्राणी की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है। प्रतिक्रियाओं अथवा व्यवहार से तात्पर्य प्राणी की सभी प्रकार की प्रतिक्रियाओं, समायोजन, कार्यों तथा अनुभवों से है।"[6] - चार्ल्स ई. स्किनर

उपर्युक्त परिभाषाओं को देखकर मनोविज्ञान की हम परिभाषा करते समय कह सकते हैं - "मनोविज्ञान मानव मन में घटित सभी क्रियाओं का शास्त्र है।"

मनोविज्ञान - स्वरूप :-

भारतीय तत्वज्ञान में मन यह स्वतंत्र वस्तु नहीं माना गया है। आँखें, कान, नाक, त्वचा इत्यादि इंद्रियों के जरिए अन्त:करण भिन्न-भिन्न विषयों का ग्रहण करता है और इसी अन्तकरण के मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, ऐसे चार भेद भारतीय मनोविज्ञान में माने गए हैं। "वास्तव में हमारी मुद्राएँ, भाव-भंगिमा, भाषा इत्यादि मानसिक प्रक्रियाओं के बाह्य प्रकाशन हैं। इस प्रकार शारीरिक व्यवहार भी मनोविज्ञान के क्षेत्र की पहचान के साधन रूप में वर्ण्य है।"[7]

मनोविज्ञान मानव जीवन की विविध परिस्थितियों के प्रति होने वाली मानव प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है। मनोविज्ञान वातावरण के विभिन्न अंगों के प्रति प्राणी के व्यवहार का अध्ययन करता है। हम दो प्रकार के व्यवहार का वर्णन कर सकते है

1. 'बाह्य उत्तेजक (External Stimulation)'[8]
2. 'केंन्द्रिय स्नायु-संस्थान (Central Nervous System)'[9]

मनोविज्ञान में मानव के व्यवहार के सभी अंगों को समझता है और उसे सुलझाने को मदद भी करता है। मनोविज्ञान के स्वरूप का पता हमें तब चलता है जब हम डा. एस. एस. माथुर द्वारा

लिखित 'सामान्य मनोविज्ञान' (General Psychology) में मनोविज्ञान की निम्नांकित शाखाएँ देखते हैं -

(1) सामान्य मनोविज्ञान (General Psychology)

(2) असामान्य मनोविज्ञान (Abnormal Psychology)

(3) प्रौढ मनोविज्ञान (Adult Psychology)

(4) बाल मनोविज्ञान (Child Psychology)

(5) मानव मनोविज्ञान (Human Psychology)

(6) पशु मनोविज्ञान (Animal Psychology)

(7) वैयक्तिक मनोविज्ञान (Individual Psychology)

(8) समाज मनोविज्ञान (Social Psychology)

(9) विकासात्मक मनोविज्ञान (Genetic Psychology)

(10) शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology)

(11) व्यावहारिक मनोविज्ञान (Applied Psychology)

(12) उद्योग मनोविज्ञान (Industrial Psychology)

(13) विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (Analytical Psychology)

(14) नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology)

(15) प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (Experimental Psychology)

उपर्युक्त शाखाओं से मनोविज्ञान का रूप कितना विस्तृत है इसका पता चलता है।

मनोविज्ञान के कुछ उद्देश्य है जो अब मनोवैज्ञानिकों को भी मान्य है - वे है - "मनुष्य के व्यवहारों का अध्ययन करके उसके व्यवहारों के संदर्भ में यह सत्यता एवं विश्वसनीयता से भविष्यवाणी करना कि दी हुई दशाओं में उनका क्या रुप होगा एवं यह चेष्टा करना है कि मनुष्य के व्यवहारों पर कैसे

नियंत्रण रखा जा सकेगा। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मनोवैज्ञानिकों के सम्मुख कुछ समस्याएँ आती है; जैसे (1) मनुष्य के व्यवहारों को समझना, (2) मनुष्य के व्यवहारों का भविष्य में जो रूप होगा, उनका पता लगाना, एवं (3) मनुष्य के व्यवहार पर नियंत्रण रखना।''[10]

मनोविज्ञान : महत्व और उपयोगिता :-

मानव में स्थित गुणों का ज्ञान हमें तभी पता चलता है जब हम उसके आचरण को व्यवहार को ठीक प्रकार से जाँच ले। उसीके आधार पर हम मनुष्य की मानसिक स्थिति का पता लगाते है और उसके बहुविध वर्तनों का मर्म, उस वर्तन का अनुमान इन पर नियंत्रण रखा जाए और मूलग्राही सिद्धांत प्रस्थापित किया जाय, ये मनोविज्ञान के प्रमुख प्रयोजन माने जाते हैं। सभी विज्ञानों को इतिहास यही बताता है कि विज्ञानों का जन्म मानव की जिज्ञासा प्रवृत्ति के कारण ही हुआ है। घटित घटना के कार्य-कारण भावों का पता लगाना यही मानव की जिज्ञासा प्रवृत्ति का मूल आधार है। मनुष्य ने अपने जीवन को सुखी-समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए है, उसके लिए उसने अनेको कष्टों का सामना भी किया है। मनोविज्ञान भी इसके लिए अपवाद नहीं है।

मनुष्य समाज में रहनेवाला सामाजिक प्राणी है। इसलिए उसे समाज के नियमों का व्यवहारों का पालन भी करना पडता है। ''साधारण रूप से कहा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को कुछ न कुछ मनोविज्ञान का ज्ञान होता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने और दूसरों के व्यवहार का अपनी योग्यतानुसार मूल्यांकन करता ही है।''[11]

वर्तमान स्थिति में बहुत परिवर्तन हो गया है। मानव ने आज इतना विकास तथा अनुसन्धान किया है कि वह चाँद पर अपने पैर रख चुका है। उसने अपनी जिज्ञासा शक्ति का विकास बहुत किया है। उसी जिज्ञासा से मानव ने अपने व्यवहार पर नियंत्रण भी रखा है। ''वैज्ञानिक विकास ने हमें वातावरण पर अधिकार भी दिया, जिससे हमारा जीवन सुगम बना और अणुबम इत्यादि भी दिये, जो मानव के संहार में प्रयोग होने लगे।''[12]

वर्तमान समय में मनोविज्ञान का जनमत जानने के कार्य में भी उपयोग होने लगा हैं। औद्योगिक क्षेत्रों में कुछ कुशल व्यापारी मनोवैज्ञानिकों को नये-नये विज्ञापन बनाने के कार्य में लगाते हैं ताकि लोग उस वस्तुओं को अधिक मात्रा में खरीद सके और उसके उत्पादन के क्षेत्र में वृद्धि करें। आज के युग में तनाव बहुत है। हम तनावमुक्त जीवन किस प्रकार जी सके यह मनोविज्ञान हमें बताने में सफल हुआ है। ''शिक्षा मनोविज्ञान तथा बाल मनोविज्ञान की खोजों ने परिवार के महत्त्व पर बहुत प्रकाश डाला है। हमें अब यह स्पष्ट रूप से पता है कि यदि परिवार का वातावरण दूषित है तो उस परिववार के बालकों का व्यक्तित्त्व व्यवस्थापन रहित हो जायेगा।''[13] आज के युग में शिक्षा को प्रभावित बनाने के लिए मनोविज्ञान को सफलता मिली है। शिक्षा के क्षेत्र में इससे धीरे-धीरे विकास होने लगा है। ''हम कह सकते हैं कि चाँद पर जो मानव सफल होकर लौट आये हैं, उनका बहुत कुछ श्रेय मनोवैज्ञानिकों को भी है।''[14] ''अत: मनुष्य के मन और उसके व्यवहारों के अध्ययन की दृष्टि से मनोविज्ञान का महत्त्व अनन्य साधारण है।''[15]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि मानव के विकास कार्य में मनोविज्ञान की उपयोगिता और महत्त्व बहुत है। इसीसे मानव यह सीख रहा है कि व्यथा से दूर और अधिक सुंदर कैसे जिए। मानव चरित्र को उजागर करने का कार्य मनोविज्ञान शास्त्र ही करता है शायद दूसरा शास्त्र इससे अधिक नहीं कर सकता।

साहित्य समाज मन का आईना है। इसलिए समाज में घटित क्रिया का प्रतिबिंम्ब साहित्य में दिखाई देता है। मानव हृदय के गुढ रहस्यों को खोलना यही साहित्यकार के साहित्य का प्रमुख लक्ष्य होता है। इसलिए गुढ रहस्यों को खोलने के लिए मानव मन का अध्ययन होना साहित्यकार की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक काल में मनोविज्ञान में मन का शास्त्र के रूप में अध्ययन होने लगा है। सिगमण्ड फ्रायड ने आधुनिक मनोविज्ञान के रूप में बहुत योगदान दिया है। उसने मुख्यत: मन अथवा व्यक्तित्त्व के दो पहलू स्वीकार किए है -

"(अ) गत्यात्मक पहलू तथा"[16]

"(ब) स्थल रूपरेखीय पहलू।"[17]

गत्यात्मक पहलू को फ्रायड ने "तीन भागों में बाँटा है (1) इदम् (ID), (2) अहम् (Ego). (3) परामह् (Super Ego)"[18]

(1) **इदम्** - फ्रायड के अनुसार इदम् इच्छाओं की जननी है। यह समस्त मनोजैविक इच्छाओं का मूल स्रोत है। इसकी उत्पत्ति मानव जन्म के साथ ही हो जाती है। इदम का निवास अचेतन है और इसका मुख्य उद्देश्य इच्छाओं की पूर्ति तथा मात्र आनन्द प्राप्ति करना ही है। इसी कारण व्यक्ति रचनात्मक तथा विध्वंसात्मक दोनों प्रकार की क्रियाएँ करता है।

(2) **अहम्** - फ्रायड के अनुसार अहम् को मन का मुख्य शासक कहा गया है। वास्तविकता से इसका गहरा सम्बन्ध होता है। प्रत्येक इच्छा को पूर्ण करने से पहले वह सोचने के लिए बाध्य करता है। यह इदम की इच्छाओं की पूर्ति और वास्तविकता के मध्य सन्तुलन कायम रखता है।

(3) **परामह्** - फ्रायड ने इसे आदर्श या नैतिक अहम कहा है। परामह् को नैतिकाहम् (Super Ego) भी कहा जाता है। इसका सभ्यता, संस्कृति, धर्म से अटूट सम्बन्ध है। परामह् "एक ओर इदम् की अवांछित कामुक इच्छाओं पर रोक लगाता है तो दूसरी ओर अहम् को यथार्थ लक्ष्यों के स्थान पर नैतिक लक्ष्यों की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता है।"[19]

अर्थात इदम्, अहम् और परामह् का संतुलित विकास ही मानव के व्यक्तित्त्व को विकसित कर सकता हैं।

मनुष्य का मनोविज्ञान जटिल है, वह सरल नहीं है। मानव विचारशील प्राणी है। वह सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ को जानना और समझना चाहता है। मानव मानव का उसके मन का अभ्यास करना चाहता है। आज का जीवन वैविध्यपूर्ण है। मनुष्य की सभी इच्छायें पूरी नहीं हो पाती है। मनुष्य को

इच्छाओं को दबाकर ही जीना पड़ रहा है। मानव मन में दमित इच्छाओं को आवाज देने का कार्य साहित्य को करना पड़ रहा है। मानव मन की भावनायें अभिव्यक्त करने के लिए साहित्य का सहारा साहित्यकारों को लेना पड़ता है। सफल साहित्यकार मानव मन में दमित भावना, इच्छाओं को नाटक के पात्रोंद्वारा उजागर करता है। ''हानूश'' और ''कबिरा खड़ा बजार में' के बारे में भीष्मजी निश्चित रूप से यशस्वी हुए दिखाई देते हैं।

नाटक में मनोविज्ञान का अधिक महत्त्व है। पात्रों की मनोदशा पर नाटक के प्रभाव का पता चलता है। मनुष्य की मानसिक यथार्थताओं को प्रतिबिंबित करना ही नाटक का उद्देश्य होता है, इसलिए नाटक का मूलाधार मानव और उसका चरित्र ही है।

''हानूश'' :-

मनुष्य सृजनशील प्राणी है। वह अपना जीवन अधिक सुखमय बनें तथा अपनी तरक्की हो इसलिए सदा प्रयत्न करता रहता है। 'हानूश' इसी सृजनशीलता पर आधारित है।

भीष्म साहनी सोवियत संघ के अपने प्रवास काल में 1960 के आसपास पूर्वी युरोप की यात्रा के दौरान चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग पहुँचे। साहनीजी ने प्राग में पुराने गिरजे, मध्ययुगीन वातावरण तथा वहाँ की एक पुरानी मीनार घड़ी को देखकर उसका इतिहास और वहाँ के बादशाह द्वारा उस घड़ी के निर्माण को दिये गये विचित्र पुरस्कार की कहानी सुनी। यह कहानी सुनकर उरनके मन-मस्तिष्क पर अमीट प्रभाव पड़ा, उसी प्रभाव ने ''हानूश'' नाटक को जन्म दिया।

''हानूश'' नाटक का प्रमुख पात्र हानूश नामक एक कुफ्लसाज है। हानूश ताला बनानेवाला एक सामान्य मिस्त्री तथा कलाकार है। इसी कलाकार की सृजनेच्छा शक्ति और संकल्प की तीव्रता को, पूरी संवेदनशीलता से नाटक के तीन अंकों में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ नाटककार ने हानूश की सृजनशीलता और उसकी विवशता को मानव मन की दृष्टि से प्रस्तुत किया है। लेखक ने हानूश की संकटापन्न स्थिति को पूरी तरह पहचाना है।

हानूश गहरे आर्थिक संकट का शिकार है लेकिन फिर भी वह अपना घड़ी बनाने का संकल्प पूरा करना चाहता है। वह अपने परम्परागत काम को पूरा वक्त नहीं दे पाता लेकिन घड़ी बनाने के आविष्कार में हमेशा उलझा रहता है। पिछले, दस-बारा साल से घड़ी बनाने की धुन से अच्छा खाना , गर्म कपड़ों और दवा के बिना वह अपना इकलौता बेटा गवाँ चुका है। अब हानूश की पत्नी कात्या भी उसके बड़े भाई पादरी से शिकायत करते हुए हानूश का अनादर भी करने लगी है। वह कहती है कि, ''उसमें पतिवाली कोई बात हो तो मैं उसकी इज्ज़त करूँ। जो आदमी अपने परिवार का पेट नहीं पाल सकता, उसकी इज्ज़त कौन औरत करेगी?''[20] इतना मानसिक तनाव होते हुए भी हानूश अपना संकल्प छोडने को तैयार नहीं। हानूश परिवार की आर्थिक तंगी से परेशान है। उसे इस बात का भी दुःख है कि वह अपने परिवार की देखभाल ठीक ढंग से नहीं कर पा रहा, पर वह अपने संकल्प और शौक से मजबूर है। उसका मन शायद उसी कार्य में अधिक लग रहा है, जो संकल्प की पूर्ति चाहता है।

पादरी भाई हानूश को समझाता है, वह उसे इस बात से भी परिचित करता है कि गिरजेवाले अब उसे घड़ी बनाने के काम के लिए मदद नहीं देंगे। तो हानूश नाराज होता है और घड़ी बनाने की बात अपने मन से कुछ देर तक निकालता है। यह बात वह उसके साथी बुढे लोहार से कहता है तो वह उसे ऐसा न करने के लिए कहता है। वह उसका हौसला बढ़ाता है, उसका विचलित मन फिर से नगरपालिकावालों की मदद से घड़ी बनाने के काम में जुट जाता है। हानूश घड़ी बनाने के काम में सफल होता है। संवेदनशील कलाकार के लिए परिवेश महत्वपूर्ण होता है। हानूश ने भी अनेकों परिस्थितियों का सामना किया और आखिर अपने कार्य में सफलता हासिल की।

''मनुष्य के जीवन में भाव और संवेगों (Feelings and Emotions) का अत्याधिक महत्त्व है। लेकिन भाव और संवेगों में अन्तर हैं। भाव एक प्रारंभिक सरल मानसिक प्रक्रिया है जो प्राणी को सुख अथवा दुःख की अनुभूति कराती है।''[21] हानूश को जब सफलता हासिल होती है तो चारों ओर लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। उसे फुलों के गुलदस्तें भेट देते हैं, बधाई और शुभकामनाएँ देते हैं। गली

से आवाज आने लगती है, जुग-जुग जियो हानूश! नगर को चार चाँद लगा दिए। नगर का माहौल खुशीका बन जाता है। सभी लोग हानूश की सफलता की सुखद अनुभव में उसका साथ देते है। लेकिन महाराज से हानूश को जो क्रूर इनाम मिलता है वह ताजमहल के शाहजहान की याद अवश्य दिलाता है। शहाजहान ने तो ताजमहल बनवाने वाले कारागिरों के हाथ-पैर तोडे डाले ताकि कोई दूसरा ताजमहल न बनवा सके। यहाँ भी महाराज ने हानूश को दरबारी का एक ओर रूतबा दिया तो दूसरी ओर उसकी दोंनों आँखें निकालने का हुक्म दिया ताकि हानूश भी दूसरी घड़ी न बनवा सके। महाराज का पुरस्कार और सम्मान पाकर हानूश पर एक तरह से वज्रघात ही हो जाता है। लेकिन एक कलाकार की अप्रतिम सृजनशीलता को कैसे नष्ट किया जा सकता है? ''घड़ी उसके लिए कला के जुनून जैसी हैं लेकिन अब, जब वह अन्धा कर दिया गया है तो उसे लगता है कि उसके अन्धेपन का मजाक उडाया जा रहा है। घड़ी बजती है तो उसे लगता है सब उस पर हँस रहे है।''[22] हानूश के मन की स्थिति द्वंद्व में पडती है। एक ओर खुशी है तो दूसरी ओर पीड़ा है। वह अपनी खुशी का इजहार नहीं कर सकता, न पीड़ा को व्यक्त कर सकता। हानूश बादशहा पर अपना क्रोध जताना चाहता है इसलिए वह जानबुझकर बादशहा सलामत की सवारी के आगे कुछ पडता है। क्रोध मानव मन की शांति भंग करनेवाला एक मनोविकार ही है। क्रोध के समय मानव को अच्छे-बुरे की समझ कम होती है। हानूश के मन की स्थिति कुछ इसी प्रकार की हो गई है। जिस घड़ी के कारण हानूश की यह दशा हुई है, उसी घड़ी के बंद होने की खबर मिलते ही उसका मन व्याकुल हो जाता है। घड़ी दुरुस्त करने के लिए जब हानूश को मीनार प चढ़ा दिया जाता है तब हानूश घड़ी को क्रोध में हथौड़े से तोड देना चाहता है। लेकिन एक व्यक्तिद्वारा अपनी हुनर की प्रशंसा सुनकर घड़ी के प्रति हानूश की ममता जाग उठती है। वह अपने क्रोध पर नियंत्रण करता है। घड़ी के फिरसे शुरू होनेपर उसके चेहरे पर संतोष का भाव झलक उठता है। उसे इस बात की भी खुशी होती है कि जेकब के भाग जाने में सफल होने के कारण घड़ी बनवाने का भेद जिन्दा रहेगा। घड़ी के बजने से हानूश के आँखों में खुशी के आँसू आने लगते हैं और वह हँस उठता है। '' हँसी - संघर्ष को दूर करने और तनाव को कम करने में बहुत सहायता देती है।''[23] शायद हानूश के मन में भी अब बादशहा

के प्रति न भय है न क्रोध। हानूश के मन का तनाव कम हुआ है इसलिए वह अपने पत्नी कात्या को बेफिक्र रहने कहता है। अन्त में वह अधिकारी और कात्या से कहता है, "मैं अपनी सफाई नहीं दे रहा हूँ। मुझे अपनी सफाई में कुछ भी नहीं कहना है। (आश्वस्त भाव से) इस लम्बे सफर का एक और पड़ाव खत्म हुआ, कात्या। न जाने अभी कितने पड़ाव बाकी हैं। पर तुम चिन्ता नहीं करो कात्या। घड़ी चलने लगी है। मुझे कोई अफसोस नहीं, किसी बात की चिन्ता नहीं। अब मुझे विश्वास है, घड़ी बन्द नहीं होगी, कभी भी बन्द नहीं होगी। (अधिकारी से) मैं तैयार हूँ। जहाँ मन आए ले चलो।"[24] हानूश के मन में अब क्रोध, भय और चिन्ता इन संवेगों की तीव्रता कम हो गयी है। इसलिए हानूश का मन अब आनेवाली कठिनाई का सामना करने के लिए तैयार हो गया है। वह अपने भावों को मुक्त रूप से कहने का साहस कर रहा है। संक्षेप में हूनश अपने मन को कठोर बनाकर आनेवाले संकटों का सामना करने के लिए तैयार हो गया है। उसका मनोबल बढ़ गया है।

कात्या :-

"हानूश" नाटक की प्रमुख स्त्री पात्र कात्या है। जो हानूश की पत्नी है। वह हानूश के घड़ी बनाने के काम पर नाराज है। इसीकारण क्रोध और चिंता ये दोनों संवेग कात्या में अधिक दिखाई देते हैं। नाटक के अन्त में भय और प्रेम के संवेग भी दिखाई देते हैं। अपने क्रोध को व्यक्त करते हुए वह पादरी से हानूश की शिकायत करते हुए कहती है, "उसमें पतिवाली कोई बात हो तो मैं उसकी इज्ञत करूँ। जो आदमी अपने परिवार का पेट नहीं पाल सकता, उसकी इज्ञत कौन औरत करेगी?"[25] कात्या के मन में चिन्ता इस बात की है कि वह अपने घर-परिवार किसी तरह सँभाले ? हानूश तो अपना पूराना कामधंदा छोडकर घड़ी बनाने के काम में व्यस्त है। इसी कारण घर खर्चा चलाने के लिए पूरी तरह से आमदनी भी नहीं हैं। अपने इसी हालात के कारण वह अपने एक बेटे को खो बैठी है। उसे इस बात की चिन्ता है कि वह अपने परिवार को आर्थिक संकट से कैसे बाहर निकालें। कात्या अपने क्रोध पर काबू नहीं पाती, इसलिए वह चिडचिडाहट भी अधिक करती है। "चिडचिडाहट भी क्रोध का ही एक हल्का रूप है, जिसकी व्यंजना प्राय: शब्दों तरही रहती है।"[26]

कात्या घर के हालात से मजबूर है। ऐसी परिस्थिति में वह अपने पति के घड़ी बनाने के कार्य के लिए उसका हौसला कैसे बढ़ा सकती है ? कात्या अपने पति हानूश की परिस्थिति से पूरी तरह परिचित है। वह उसकी आदतें अच्छि तरह से जानती है। उसके रोने-चिल्लाने से कुछ नहीं बदल सकता। वह खुद को मुर्ख मानती है। कात्या की घर की चिन्ता करने की आदत बुरी नहीं है। ''चिन्ता भय से उत्पन्न होती है।''[27] कात्या के मन में यही चिन्ता है कि वह अपनी गरीबी के कारण एक जवान बेटा खो बैठी है कहीं घर की सुख-शान्ति को न खो बैठे। अपनी एकलौती बेटी यान्का की अच्छी परवरिश हो यही चिन्ता उसे बार बार सताती है। इसलिए वह अपने परिवार के प्रति चिन्ताग्रस्त दिखाई देती है।

कात्या को किसी की निन्दा करना अच्छा नहीं लगता। वह संवेदनशील है। संवेदनशील होने से वह हानूश के कार्य का विरोध उसके सामने खुलकर नहीं करती। वह अपने परिवार कि जिम्मेदारी जानती है। इसलिए जेकब को रखने का आग्रह करती है। हानूश को घड़ी बनाने के काम के लिए आजाद करती है। वह पलायनवादी वृत्ति की नहीं है। हानूश घड़ी बनाने के काम में सफल होता है, तो वह खुद अपनी कामयाबी के पिछे कात्या की कुर्बानी को मान्य करता है।

कात्या हानूश की मानसिकता को अच्छी तरह से जानती है। कात्या केवल हानूश की पत्नी ही नहीं बल्कि उसकी संगिनी है। हानूश के दु:खों के समय भी वह उसका साथ देती है। वह नारी के मन का प्रतीक है। त्याग और प्रेमभाव नारी के मूल स्वभाव होते हैं, कात्या उसपर खरी उतरती है। कात्या केवल परिस्थितिवश होने के कारण अपने पति के घड़ी बनाने के काम पर नाराज होकर शिकायत करती है। हानूश की खुशी और सुख के लिए वह शहर छोडकर जाने के लिए तैयार होती है। जब हानूश घड़ी दुरुस्त करने के लिए जाता है तो वह हानूश के लिए खाना लेकर जाती है। हानूश अन्धा होने के कारण उसके हाथ में लुक्मा तोड़-तोडकर देती है। हानुश के भावों को समझनेवाली कात्या सचमुच उसकी अर्धांगी है।

'हानूश' नाटक के कथानक की मूल संवेदना को उजागर करने का काम हानूश की बेटी यान्का, उसका साथी, बुढ़ा लोहार, ऐमिल और महाराज करते है।

यान्का हानूश की एकलौती बेटी है। वह अपने पिता का मनोबल बढ़ाने का कार्य करती है। माँ को समझाती है और खुद कहती, मैं काम करूँगी, मैं अब बड़ी हो गई हूँ। यान्का माँ के क्रोध को शान्त करने का काम करती है। घड़ी की टिक्-टिक् सुनाई देने पर खुशी से नाचती है और अपनी माँ को उलाहना देती है कि तुम यों ही बापू पर बिगड़ती रहती हो। यान्का स्वभाव से शान्त है।

बूढ़ा लोहार ''हानूश'' नाटक का एक ऐसा पात्र है जो हानूश के घड़ी बनाने के काम में यथासंभव सहाय्यता करता है। वह हानूश को चिन्तित देखता है तो चिन्ता का कारण भी पूछता है। हानूश को चिन्ता से मुक्त भी करता है और उसका मनोबल बढ़ाता है। उसे कहता है कि ''मैं पिछले तेरह साल से तेरे मुँह से यही सुनते आया हूँ कि घड़ी बनाने का काम मैं छोड रहा हूँ।'' वह यह घड़ी बनाने के लिए अपने दूकान से मदद भी करता है। वह कात्या से कहता है, ''सुनो, कात्या, मैं हूँ तो लोहार, लोहे का काम करता हूँ, पर मैंने दिल लोहे का नहीं पाया है। हानूश इतना-सा था जब मेरी दूकान के सामने आकर खेला करता था, सारा-सारा दिन मुझे धौंकनी चलाते देखा करता था। तब भी मैं कहा करता था कि यह लड़का किसी दिन बड़े काम में हाथ डालेगा। अब जो इसने घड़ी बनाने का फैसला किया तो मैंने सोचा इसे मेरी दूकान से प्रेरणा मिली है, अब इसकी मदद नहीं करूँ तो किसी की करूँ?''[28] उसे पूरा यकीन था कि कामयाबी हानूश के पाँव चूमेगी, हानूश का नाम चारो ओर होगा, सभी लोग हानूश की इज्ज़त करेंगे। वह हानूश का मनोबल बढ़ाने के लिए उसे इस बात की भी याद दिलाता है कि जो लोग कामयाब नहीं होते उनकी पत्नियाँ सबसे ज्यादा उन्हें दुत्कारती है। यही दुनिया का दस्तूर है। लोहार को लगता है कि हानूश अपना काम आधा-अधूरा न छोड़ें। वह हानूश के मन को अपने कार्य पर केंद्रित करने का कार्य करता है। लोहार हानूश को विभिन्न मार्ग बताता है जिससे हानूश के कार्य में मदद मिलें और हानूश घड़ी बनाने में सफल हो जाय। बूढ़ा लोहार हानूश के काम में प्रेरणा है,

वह उसकी सफलता चाहता है, उसकी हिम्मत बढ़ाता रहता है और उसके साथ भाग-दौड़ भी करता है।

"मनुष्य के मन में किसी न किसी बात को लेकर सदैव संघर्ष या अन्तर्द्वंद्व चलता रहता है। इससे उत्पन्न समस्याओं के समाधान में मनोरचनाएँ महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सरल शब्दों में मनोरचना वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से इदम्, अहम् तथा परम अहम् के बीच उत्पन्न संघर्ष (चेतन या अचेतन स्तर) को दूर किया जाता है।"[29] हानूश के मन में भी चले अंतर्द्वंद्व को सुलझाने का कार्य लोहारने सफलता से किया है। जिससे हानूश के मन में चले संघर्ष को दूर करने मे सहाय्यता मिली हैं और हानूश भी अपने कार्य में सफल हुआ है।

ऐमिल हानूश का दोस्त है जो हानूश को विभिन्न प्रकार की सहाय्यता करता है। हानूश के घर की हालात से वह पूरा परिचित है। गिरजे वालों से वजीफे की दरख्वांस्त नामंजूर होने पर वह गुस्सा करता है और वहाँ होनेवाले भ्रष्टाचार पर ऊँगली उठाता है, मानो हानूश के दुःखी मन को सहारा देता हो। जब हानूश ऐमिल से कहता है कि उसे दरबार के नियम-कायदे मालूम नहीं तो ऐमिल हानूश का मनोबल बढ़ाते हुए कहता है तुम जनम से दरबारी हो नहीं इसलिए डरने की कोई बात नहीं। एक सच्चे दोस्त की तरह वह हानूश को इस यथार्थ से भी परिचय करवाता है कि सभी राजा तारीफ के भूखे होते हैं इसलिए तुम महाराज की सिर्फ तारीफ करना। इस बात का भी ध्यान रखना कि न कुछ नगरपालिका के हक में कहना, न गिरजेवालों के खिलाफ।

हानूश की व्यथा को ऐमिल अच्छी तरह से समझता है। हानूश घड़ी के बिना नहीं जी सकता, यदि वह फिर से घड़ी बनाने लगे, तो उसे नई जिन्दगी मिल जाएगी यह सोचकर ही ऐमिल हानूश को शहर से दूसरे शहर भाग हाने की सलाह देता है। जेकब को सफलता से भाग ले जाने में मदद भी करता है। ऐमिल हानूश के मन में दमित आन्तरिक पीड़ा को समझता है।

हानूश नाटक में चित्रित महाराज क्रोध और संशयी जैसे संवेग से पीड़ित है। वे अपने अस्तित्व को सिद्ध करना चाहते हैं इसलिए एक ओर हानूश को एक हजार स्वर्ण मुद्रायें प्रदान करते हैं,

दरबारी का रूतबा प्रदान करते हैं, तो दूसरी ओर उसे दण्डित भी करते हैं। ''एडलर के अनुसार प्रभुत्व पाने की मौलिक इच्छा हर व्यक्ति में होती है।''[30] महाराज के एक सवाल के जवाब में जब हानूश कहता है नगरपालिकावालों ने उसकी बड़ी मदद की है तो उनका अहंकार जाग उठता है। वे भड़कते उठते है और कहते हैं कि तुमने हमसे मदद क्यों नहीं माँगी? महाराज का अपने पूरे राज्य में रौब है, इसी रौब के कारण हानूश महाराज से कहता है कि यह घड़ी मैंने महाराज और राज्य की शान बढ़ाने के लिए, राजधानी की रौनक बढ़ाने के लिए बनाई है।

महाराज हानूश को विभिन्न प्रश्न पूछते हैं। हानूश के जवाबों से वे प्रभावित हो उठते हैं, खुशी से उसे इनाम देते हैं, लेकिन उन्हें हानूश पर विश्वास नहीं है। वे संशयी है इसलिए वे कहते हैं कि हानूश पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए। हानूश कहीं दूसरी घड़ी न बनवायें इसलिए उसकी दोनो आँखे निकालने का हुक्म भी देते हैं। महाराज का हुक्म वास्तविक शासक को तो हानूश को अन्धा बनाना मानवीय विडम्बना को चित्रित करता है।

'हानूश' नाटक की मानवीय संवेदनाओं को बढ़ाने का कार्य नाटक के अन्य पात्र भी करते हैं। जैसे, जेकब, हुसाक, जॉन, शेवचेक, जार्ज, टाबर, राजा के अधिकारी लाट पादरी हानूश के जीवन में उतार-चढ़ाव लाने का कार्य करते हैं। 'हानूश' नाटक मानवी नियती और मानसिक स्थिति को प्रस्तुत करता है।

'कबिरा खड़ा बजार में' :-

सुप्रसिद्ध कथाकार और नाटककार भीष्म साहनी का यह दूसरा नाटक है, जो संत कबीर के जीवन और व्यक्तित्त्व को आधार बनाकर लिखा गया है। कबीर कालिन जीवन की विसंगतियां और विद्रुपताएं पूरी तरह इस नाटक के जरिए हमारे सामने आ जाती है। प्रस्तुत नाटक मानव मन में स्थित रूढी, परम्परा, अन्धविश्वास से बाहर निकालने का संदेश देता है, जो मानव के विकास कार्य में बाधाएँ पैदा करता है। मानव को सच्ची मानवता सिखाता है। 'कबिरा खड़ा बजार में' नाटक मानव में स्थित

क्रोध, भय, घृणा, चिन्ता, शोक जैसे संवेगों को शांत करने का और प्रेम संवेग का महत्त्व बताने का कार्य करता है। प्रेम ऐसा संवेग है जो मानव को प्रसिद्धि देता है और समाज में उस व्यक्ति का महत्त्व बढ़ाता है, जिसके कारण समाज उसकी प्रशंसा करता है। प्रेम में ममता छुपी होती है जो मानव-मानव स्थित दूरियाँ दूर करती है। इन सभी विशेषताओं का परिचायक नाटक 'कबिरा खड़ा बजार में' है।

कबीर : -

भारत के इतिहास में और हिन्दी साहित्य दोनों में कबीर का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। कबीर का व्यक्तित्त्व फक्कड स्वभाव और वाणी मन को छुनेवाली, विचार संघर्ष करने की प्रेरणा देते रहे हैं। आज के युग में भी उनके विचारों को उतना ही महत्त्व प्राप्त होता है, जितना पहले युग में था। इस नाटक के कबीर केंद्रिय व्यक्ति हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्त्व पर यह नाटक रोशनी डालता ही है और साहित्य ज्ञानियों को मंत्रमुग्ध भी करता है।

कबीर एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से पैदा हुए थे। उस ब्राह्मणी ने लोकलज्जा और भय के कारण उसे एक तालाब के किनारे छोड़ दिया था। उसी तालाब के किनारे से नवविवाहीत दम्पत्ति नूरा और नीमा विवाह के बाद जा रहे थे, तब नीमा ने नवजात शिशु को देखा उसका मन दयावश हो उठा। उसने उस शिशु को घर लाया उसे माँ-बाप का प्रेम दिया। कबीर एक ब्राह्मणी का बेटा होकर भी जुलाहे परिवार के संस्कार उसपर पूरी तरह से हो गये थे। कबीर अब खड्डी पर काम करने, कपडा बुनने और बुने कपडों के थान को बाजार में बेचने के काम भी करने लगा था। लेकिन उसका मन उस कार्य में पूरी तरह से नहीं लगता था। कबीर का पालन-पोषण एक गरीब अनपढ़, अज्ञानी परिवार में हुआ था। इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कबीर साहस के साथ विरोधियों से संघर्ष करते थे। अपने ज्ञान के आधार पर समाज का पथ-दर्शन किया। पद रचे और उन पदों को जनता के सम्मुख मधुर स्वर में गाकर उनका मनोरंजन भी किया। अज्ञान से पीड़ित जनता को सच्चाई का मार्गदर्शन भी किया।

कबीर का मन जिज्ञासु है। जिज्ञासा के कारण उनके मन में उठनेवाले विभिन्न सवालों के जवाब पाने के लिए ही वह साधु-फकिरों से मिलते हैं, उनके सामने अपने प्रश्न रखते हैं उनका उत्तर यदि संतोषजनक नहीं मिलता तो उनसे झगड़ा भी मोल लेते है, मार खाते हैं और यातनाएँ सहते हैं। कबीर का मन सदा परेशान, उद्विग्न और अशांत रहता है। अपनी आंतरिक पीड़ा के कारण कभी कभी उनके आँखों से आंसू बहने लगते हैं। कबीर की यही जिज्ञासा उन्हें रात भर सोने नहीं देती। वह अपने आस-पास की सामाजिक विकृतियों तथा धार्मिक रूढ़ियों के कारण सामान्य जन को दु:खी देखकर परेशान है तथा उनके लिए कल्याण मार्ग की खोज के लिए प्रयत्न करते हैं।

कबीर का स्वभाव फक्कड स्पष्टतावादी था। इसी स्वभाव के कारण वह घर मे माता-पिता के स्नेह को छोडकर जंगलों, तीर्थ-स्थानों पर भागे, अपना अधिक वक्त साधु और फकिरों की संगती में बिताया। बाजार में थान बेचने जाते और अपने सभी मित्रों को लेकर फकीराना दरबार लगाते थे। अपने इस दरबार में सभी की निंदा करते थे, मुल्ला और पंडितों की खिल्ली उडाते थे। उनका स्वभाव था कि वे किसी गरीब, निरपराध व्यक्ति पर होनेवाले अत्याचार होते नहीं देख सकते। अत्याचारी का विरोध करते हैं, और गरीब व्यक्ति के प्रति उनके मन में प्रेम और हृदय में करूणा का भाव होता था। महन्तजी की शोभा-यात्रा के मार्ग में आनेवाले बालक पर जब साधु कोडे बरसाता है, तो कबीर उसे छुडवाते है और कहते हैं, "तभी तो कहा बड़े सूरवीर हो, साधु भी हो और सूरवीर भी, तभी तो बच्चे को अधमरा करके छोडा।"[31] अंधे भिखारी की मृत्यू कोतवाल के कोडों के प्रहार से हुई है यह सुनकर कबीर का मन दु:खी होता है। उनके मन में उस भिखारी की माँ पर क्या बितेगी यह विचार आता है। अपने दृढ विचारों, आत्म-विश्वास और फक्कड़पन के कारण कबीर जीवन भर सदा संघर्ष करते रहे। कबीर स्वभाव से निर्भय थे, इसीकारण उनपर किसी प्रलोभन का असर नहीं होता था। कायस्थ कबीर की संघर्षशील वाणी को चुप करने के लिए उन्हें राजकवि बनवाने का प्रलोभन दिखाता है, उनकी बड़ी प्रशंसा करता है। लेकिन अड़िग स्वभाववाले कबीर उसकी इन बातों को नहीं मानते। कबीर अन्त तक

अपने मन और संकल्प पर अड़िग रहते हैं। वे न अपने सत्संग को रहित करते हैं और न सिकन्दर बादशाह के सम्मुख झुकते हैं।

कबीर ने अपनी वाणी में समाज में व्याप्त छुआछूत आदि कुरीतियों के विरूद्ध, धर्म में चले बाह्याचार और बाह्याडम्बर के विरूद्ध तथा राजनीतिक क्षेत्र में चले शासक वर्ग, सामन्तो तथा धनवानों की तानाशाही के विरुद्ध आवाज उठायी। अपने पदों के माध्यम से समाज प्रबोधन का कार्य किया, क्रांति की आवाज दी। कबीर ने अपने पदों के जरिए ईश्वर आराधना करने के लिए मूर्तिपूजा, रोजा-नमाज, व्रत-उपवास करना आदि को व्यर्थ कहा है। उनका कहना है कि घर गृहस्थी बसाकर मानव जाति की सेवा करने से भी ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। कबीर की चिन्ता, उनके मन की व्याकुलता अपने लिए नहीं है बल्कि समाज के लिए है। कबीर ईश्वर का एक ही रूप मानते है सिर्फ, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि ईश्वर को अलग-अलग नामों से पुकारते हैं। ईश्वर सर्वव्याप्त हैं।

''युंग के मतानुसार व्यक्तित्त्व के दो प्रकार हैं - 1) अन्तर्मुखी, 2) बहिर्मुखी। अन्तर्मुखी व्यक्तित्त्व वाले व्यक्ति अधिकतर अपने बारे में सोचा करते हैं और उनकी रूचि बाह्य जीवन में नहीं होती। इसके विपरीत बहिर्मुखी व्यक्तित्त्व वाले व्यक्ति सामाजिक जीवन में अत्यंत क्रियाशील होते हैं।''[32] इसमें कबीर का व्यक्तित्त्व भी बहिर्मुखी है जो सामाजिक जीवन में क्रियाशील रहता है और समाज परिवर्तन के कार्य में अपना अनुठा योगदान देनेवाला जान पड़ता है।

कबीर उदार, प्रेमी तथा कर्तव्यनिष्ठ पुरूष है। वे अपनी नवविवाहिता पत्नी की प्रशंसा करते हैं और खुद के हाथों से बुनी चुनरी उसे भेट में देते हैं। प्रेम ही एक ऐसा संवेग है जो मानव मन को जोड़ने का कार्य सफलता से कर सकता है। कबीर अपनी पत्नी लोई की पूरी प्रेम कहानी सुनता है, तब उसे अपने पिता के घर जाने और उस साहुकार के बेटे से विवाह कर सुखी जीवन बिताने को कहता है। लेकिन लोई कबीर के प्रेम भरे बर्ताव से खुश होती है और कबीर को न छोडकर जाने की सोचती है। कबीर भी उसका प्रेमपूर्वक स्वीकार करता है। कबीर स्वभाव से, असहिष्णू एवं शीघ्रकोपी नहीं है।

उसका हृदय उदार है। "एडलर प्रेम और विवाह को, समाज की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्व देता है। 'प्रेम और विवाह' में सहकारिता है। यह सहकार्य केवल उन दोनों के लिए नहीं है बल्कि मनुष्य जाति की एकता, कल्याण तथा सुस्थिति का द्योतक है। एकता तभी हो सकती है, जब दोनों का सहकार्य और एक दूसरे में विश्वास हो।"[33] कबीर और लोई का स्वभाव ऐसा ही है।

कबीर का मूलआधार मानवतावावद था। आपके मन में प्राणीमात्रा के प्रति अगाध प्रेम, दया, करूणा, सहानुभूति थी। आप सर्वधर्मसमभाव मानने वाले थे। कबीर के मन में अपनी माँ के प्रति ममता थी। प्रसिद्ध मनोविश्लेषक युंग के अनुसार, "बहिर्मुखी वे होते हैं जिनकी सारी रूचि बाहर की ओर होती है। समाज में मिल-जुलकर रहना, मित्रों के साथ गप्पे-मजाक करना, एकान्त से घबराना आदि इनका स्वभाव-धर्म होता है। ऐसे व्यक्ति सदैव प्रसन्नचित्त होते हैं।"[34] कबीर के स्वभाव गुण तो युंग के इस विचार की पुष्टी करते हैं।

नीमा :-

"मध्यमवर्ग के जीवन की नींव एक ओर तो उसकी आर्थिक स्थिति पर है और दूसरी ओर उसके परिवार की केंन्द्रबिंदू स्त्री पर।"[35] नारी जीवन के परिवार के केंद्र दो ही होते हैं - एक उसका पति और दूसरा सन्तान। इन्हीं दो को लेकर नारी अपना सारा जीवन यापन करती है। उसका जीवन उन्हीं की खुशियाँ बढ़ाने के काम में समेटा रहता है। नीमा भी ऐसे ही आदर्श नारी की परिचायक है। कबीर को नीमा ने अपने गर्भ से जन्म नहीं दिया लेकिन उसको अपने बेटे जैसा ही लाड-प्यार दिया। वह तो ममता और वात्सल्य की आदर्श बनी। कबीर के स्वभाव के कारण नूरा और नीमा दोनों परेशान थे। नूरा अपना सारा गुस्सा कबीर पर उतारता था लेकिन ममता हृदयवाली नीमा उसे लाड-प्यार से समझाती है। वह अपने पुत्र का गुणगान करती रहती है ताकि नूरा के प्रति कबीर के मन में रोष कम हो। नीमा को हमेशा इस बात का भय लगा रहता कि कबीर उसके जन्म के बारे में जानकर कहीं उसे छोड़कर न जाय। नीमा को इस बात का भी भय है कि कबीर मुल्ला-मौलवी और पण्डों से बहस करने,

उनके द्वेष का भाजन न बने। इसलिए वह अपने दिल पर पत्थर रखकर किसी दूसरे शहर अलग रहने को कबीर से कहती है। वह खुद दु:ख सहन करने के लिए तैयार है लेकिन अपने पुत्र को सुख देना चाहती है।

नीमा का हृदय अपने पुत्र के प्रति बड़ा ही कोमल है। कबीर का खून से भीगा कुर्ता देखकर उसका मन व्याकुल हो उठता है। वह सिर से पाँव तक कांप उठती है। कबीर को वह बैठने के लिए कहती है। नीमा भयभीत होती है। कबीर की हरकतें नीमा की मानसिक चिन्ताओं को और परेशानियों को बढ़ाने का कार्य करती है। नीमा तो ममता, चिन्ता तथा सेवाभावना का प्रतीक है।

नीमा की मनोदशा द्वंद्व की है, एक ओर वह अपने पति का क्रोध शान्त करने का प्रयास करती है तो दूसरी ओर अपने बेटे को समझाने का कार्य करती है। उसके मन में ईर्ष्या या द्वेष का भाव बिल्कुल नहीं है। वह अपने इसी स्वभाव गुण से अपने बेटे कबीर का हाथ लोई के हाथ में सौंप देती है और कहती है, "इसकी देखभाल अब तू करना। अब यह मेरे बस का नहीं है।"

नीमा तो ऐसा व्यक्तित्त्व है कि अपने पति और पुत्र के वेदना भरे बर्ताव पर भी अपने कोमल और संयमी हृदय का परिचय देती है। नीमा अपने परिवार की मनोदशा को प्रेम संवेग में बाँधना चाहती है।

नूरा :-

नूरा कबीर का पिता है, जिसने कबीर का पालन किया है। वह सामान्य लोगों की तरह अपना जीवन जुलाहा बस्ती में बिता रहा है। नूरा स्वभाव से धर्मभीरू और ममतापूर्ण हृदयवाला भी है। नूरा पिता होने का पूरा कर्तव्य निभाता है। वह अनुशासन प्रिय है, कठोर है, इसलिए वह कबीर के आचरण पर क्रोधित होता है। नूरा के मन में कबीर के प्रति कल्याण कामना है इसलिए वह चिन्तित भी दिखाई देता है। नूरा की चिन्ता भी नाहक नहीं है क्योंकि कबीर उसके सामने हररोज कोई ना कोई नई समस्या निर्माण करता है, जिसके कारण उसका पितृत्त्व स्वभाव जाग उठता है।

नूरा कबीर को दु:खी और चिन्तित नहीं देखना चाहता इसलिए जब कबीर उसे पूछता है कि क्या पड़ोसी थान दे गया कि नहीं ? पहले तो नूरा उसे ताने देता है, लेकिन बाद में 'दे गया है थान'

कहता है। वह अपने पुत्र के साथ पूरा सहयोग भी करता है। भण्डारे के समय वह कबीर को पूरी सहाय्यता करता है। नूरा की एक समस्या है कि वह पुरूष होने के नाते वह अपना प्यार अपनी ममता खुलकर नहीं लुटाता पर उसके मन में पुत्र के प्रति अपार स्नेह है। नूरा के हृदय में वात्सल्य की तरंगे उठती-गिरती है पर वह स्वयं को कठोर दिखाने का प्रयास करता रहता है। नूरा का आचरण, स्वभाव परिस्थितिवश है। वह सामान्य गरीब जुलाहा है इसलिए कबीर के विचार सच्चे होने पर भी उसका साथ देना हर वक्त उचित नहीं समझता। सामाजिक भय का बोझ उसके मन पर है।

लोई :-

लोई एक सामान्य देहाती लडकी है। अपने बचपने में वह नदी किनारे विभिन्न प्रकार के खेल खेलने के लिए अपनी सहेलियों के साथ जाती थी। एक दिन उसने देखा कि कुछ पण्डे कबीर को गंगा में डुबा रहे है तब वह भयभीत होती है। इस घटना को देखकर सभी सहेलियाँ भाग जाती है लेकिन लोई स्थिर एक जगह खड़ी रहती है। अंधेरा होते देख वह अपने घर भागकर जाती है और बापू को इस घटना के विषय में बताती है। लोई स्वभाव से सहृदयता और दूसरों के दु:खों को समझने वाली है।

लोई का स्वभाव सरल, भोला एवं निष्कपट है इसलिए विवाहपूर्व के संबंधों को वह छिपाती नहीं। वह अपने पति को सब कुछ बताती है। बचपन में किशोरावस्था में सामान्य किशोरी की तरह उसके मन में भी काम का बीज अंकुरित होने लगता है और वह अपने पड़ोस के साहूकार के बेटे से प्यार करने लगती है। ''फ्रायड के अनुसार स्त्री का शारीरिक विकास होने के साथ ही स्त्री में वासना की अधिक अभिरूचि निर्माण होती है और वही उसका जीवन होता है, इसलिए वासना तृप्ति का उसका उद्देश्य रहता है।''[36] लोई भी किशोरावस्था में वासना की तृप्ति के लिए छैल-छबीले व्यक्तित्त्व तथा धन-दौलत को देखकर साहुकार के बेटे से प्यार कर बैठती है।

लोई अपने पिता का आदर करती है। वह पिता का विरोध नहीं करती। पिताद्वारा पति के रूप में चुने कबीर के साथ चुपचाप विवाह करती है लेकिन अपने मन की बात नहीं बताती। सामान्य

नारियों की तरह वह भी अपने सपनों को सपनों में ही रखना पसंद करती है। कबीर के घर की दशा देखकर वह प्रथमत: दु:खी होती है। अपने पति को उलाहना देती है उसे पगलट साधु समझ बैठती है। लेकिन लोई को तभी कबीर के स्वभाव का पता चलता है जब वह उसके विवाह पूर्व प्रेम संबंधों को समझाती है तब वे उसे कहते हैं कि चाहे तो तुम लौट जाओ और उस साहुकार के बेटे के साथ विवाह कर सुख से जीवन बिताओ। कबीर के इस प्रस्ताव को वह मानकर एक बार घर से बाहर निकल भी पडती है लेकिन उसका मन कबीर की सच्ची उदारता और सहिष्णुता को देखकर प्रभावित होता है। उसका मन पलट जाता है और वह पुन: पति के पास लौट आती है। यहाँ लोई मानसिक द्वंद्व में पड़ती है लेकिन फिर भी वह अपनी समस्या को वैयक्तिक न मानकर सामाजिक माननेवाली जान पड़ती है इसलिए अपने प्रेम का त्याग करती है और कबीर के साथ रहना स्वीकार करती है।

लोई भोली जरूर है लेकिन वह चतुर भी है। उसकी भोली परन्तु चतुराई की बातें सुनकर ही नीमा को विश्वास हो जाता है कि अब कबीर गृहस्थी बसाकर रहेगा। नीमा इसी विश्वास के बलपर कबीर का ब्याह लोई से कराती है। लोई का मन पलायनवादी न होकर समर्पण भाव से प्रेरित है इसलिए उसका यही गुण उसके व्यक्तित्त्व को उजागर करता है।

''कबिरा खड़ा बजार में'' नाटक के अन्य पात्र भी नाटक की मनोदशा के अनुसार कार्य करते हैं। इनमें कोतवाल, कायस्थ, सिकन्दर लोदी आदि अपने अस्तित्त्व को मानते हैं वे सामाजिक मनोदशा का कतिपय विचार नहीं करते। अपने अहं को बरकरार रखना चाहते है, इसलिए कोतवाल अंधे भिखारी को जीवित मारता है और उसकी लाश को शहर में घुमाता है ताकि राजनीतिक कार्य में बाधाएँ न गाये। अपने बेटे के खोने से उसकी माँ भी पीड़ित है जो स्वयं शोकाकुल हो उठती है लेकिन कबीर का मनोबल बढ़ाने का कार्य सफलता से करती है। कबीर के सभी साथी सेना, पीपा, बशीरा, रैदास उनका मनोबल बढ़ाने का कार्य करते हैं। कबीर के सुख-दु:खों के क्षणों में उनका साथ देते हैं। कुलमिलाकर कबीर और उनके सभी साथियों का एक ही लक्ष्य है संपूर्ण मानवजाति का हीत करना।

'कबिरा खड़ा बजार में' नाटक में मनोविज्ञान का बड़ा ही महत्त्व रहा है। भीष्मजी ने संवेदनशीलता और अनुभव की विविधता के आधारपर नाटक को नया आयाम दिया है।

भीष्म साहनी एक संवेदनशील, सत्यान्वेषी, समाज में स्थित मध्यम वर्ग और कलाकारों की उत्पीड़ित- शोषित लोगों के दु:ख-दर्द को महसूस करने वाले एक लेखक, जागृत कलाकार है। 'हानूश' मध्यमयुगीन युरोप के सामंतीय परिवेश को प्रस्तुत करता है तथा वर्तमान युगीन कलाकार की मनोदशा की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करता है। 'कबिरा खड़ा बजार में' कबीर और उनके युग की धर्मान्धता तथा बाह्याचार का चित्रण तो करता ही है, साथ ही साथ बिगडती वर्तमान धार्मिक स्थिति की ओर इंगित भी करता है। इन दोंनों नाटक के माध्यम से भीष्मजी राजनीतिक और धार्मिक दोंनों क्षेत्र में परिवर्तन की अपेक्षा रखते हैं। मुझे इन दोनों नाटकों के अध्ययन से ऐसा लगता है कि भीष्मजी ऐसा परिवर्तन चाहते है कि जो मानव मन को सुख-शान्ति प्रदान करें। धर्म का इस्तेमाल सभी मानव के हित के लिए हो, राजनीतिक फायदे के लिए नहीं। अत: धर्म और राजनीति के रखवाले चाहे तो मानव मन में स्थित संवेगों को सुखद अनुभवों की प्रतीती करा सकते हैं।

संदर्भ

1. डा. एस. एस. माथुर - 'सामान्य मनोविज्ञान', चौदहवाँ संस्करण 1990, पृ.3
2. डा. विमल सहस्त्रबुध्दे, 'हिंदी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण', 1974, पृ. 166
3. डॉ. मिथलेश रोहतगी, 'हिंदी कहानी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन', प्र.सं.1979, पृ.1
4. डॉ. गुरुदयाल बजाज, 'साहित्य मनोविज्ञान और हिंदी एकांकी, पृ.17
5. वही, पृ.16
6. वही, पृ.17
7. पृ. 21, 22
8. वही, पृ. 17
9. वही, पृ. 17
10. डॉ. एस. एस. माथुर, 'सामान्य मनोविज्ञान', चौदहवाँ संस्करण, पृ.26, 27
11. वही, पृ. 2
12. वही, पृ. 532, 533
13. वही, पृ.534
14. वही, पृ. 535
15. श्री. जयवंत रघुनाथ जाधव, 'मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन', पृ.108
16. डॉ. गुरुदयाल बजाज, 'साहित्य मनोविज्ञान और हिंदी एकांकी', पृ.31
17. वही, पृ. 31
18. डॉ. मफत पटेल, 'हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास', पृ.29
19. डॉ. गुरूदयाल बजाज, 'साहित्य मनोविज्ञान और हिंदी एकांकी', पृ.32
20. भीष्म साहनी, 'हानूश', तीसरा संस्करण 1999, पृ.29

21. श्री. जयवंत रघुनाथ जाधव, 'मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन', पृ.109

22. भीष्म साहनी, 'हानूश', तीसरा संस्करण 1999, पृ.20

23. डा. एस. एस. माथुर - 'सामान्य मनोविज्ञान', चौदहवाँ संस्करण 1990, , पृ.211

24. भीष्म साहनी, 'हानूश', तीसरा संस्करण 1999, पृ.129

25. वही, पृ.29

26. श्री. जयवंत रघुनाथ जाधव, 'मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन', पृ.109

27. वही, पृ. 110

28. भीष्म साहनी, 'हानूश', तीसरा संस्करण 1999, पृ.45

29. श्री. जयवंत रघुनाथ जाधव, 'मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन', पृ.119

30. वही, पृ. 121

31. भीष्म साहनी, 'कबिरा खड़ा बजार में', चौथी आवृत्ती, 2000, पृ.31

32. डॉ. मफत पटेल, 'हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास', पृ.61

33. डा. एस. एस. माथुर - 'सामान्य मनोविज्ञान', चौदहवाँ संस्करण 1990, , पृ.180

34. डा. विमल सहस्त्रबुध्दे, 'हिंदी उपन्यासों में नारी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण', 1974, पुस्तक संस्थान, कानपुर, पृ. 181

35. वही, पृ. 5

36. वही, पृ. 177